

॥ तुही निरंकार ॥

(तर्ज - सत्गुरु तो कायम दायम है)

आओ मिलके हरदेव जी का
हर सपना हम साकार करे
जो मिशन बचन, अवतार का था
वो रौशन फिर इक बार करे ॥धृ ॥

आओ मिलके हम प्यार करे
एक दुजे का सत्कार करे
मिलकर के जहाँ को सजाये हम
संहार नहीं श्रृंगार करे
मानवता का पुल बनकर हम
दीवार रहित संसार करे ॥1॥

गुरु के हर वचन को माने हम
कभी किंतु- परंतु ना करे
मनमत को छोडके हम सारे
बस गुरुमत का आधार धरे
सबमे ही देखे सत्गुरु को
और सबसे सदव्यवहार करे ॥2॥

हमे निंदा से ही बचना है
नशापान से दुर रहना है
पक्को का संग ही करना है
कच्चो के संग नहीं बहना है
अवगूण ना देखे किसमें हम
सदा गुणो का ही संचार करे ॥3॥

ना अहम रहे, ना वहम रहे
हर पल तेरा एहसास रहे
सुख में, दुःख में ना डोले मन
गुरु पर पुरा विश्वास रहे
अनिकेत करे सदा शुकर शुकर
और भाणे को स्वीकार करे ॥4॥

(Note- लिखते समय संहार लिखते हैं लेकिन बोलते समय या गाते समय संगार गाना है)